This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : 6904

Unique Paper Code : 52051416 K

Name of the Paper : Hindi-B

Name of the Course : B.Com. (Prog.) Hindi-CBCS

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

(Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

हिन्दी कहानी के उद्‌भव और विकास पर प्रकाश डालिए। 12

अथवा

हिन्दी निबंध के उद्‌भव और विकास पर प्रकाश डालिए।

कहानी के तत्त्वों के आधार पर 'उसने कहा था' की समीक्षा कीजिए। 12

अथवा

'बूढ़ी काकी' का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

निबंध के तत्त्वों के आधार पर 'मेले का ऊँट' की समीक्षा कीजिए। 12

P.T.O.

अथवा

'सदाचार का ताबीज' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए।

4. "'निबिया' नारी की पीड़ा को व्यक्त करने वाली रचना है।" स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'अंधेर नगरी' नाटक की मूल-संवेदना का विश्लेषण कीजिए।

5. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए :

(क) भारतेन्दुयुगीन नाटक

(ख) हिन्दी संस्मरण का सामान्य परिचय।

6. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10+10 = 20

(क) चार दिन तक पलक नहीं झँपी। बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही। मुझे तो संगीन चढ़ाकर मार्च का हुक्म मिल जाए। फिर सात जरमनों को अकेला मारकर न लौटूँ, तो मुझे दरबार साहब की देहली पर मत्था टेकना नसीब न हो। पाजी कहीं के, कलों के घोड़े-संगीन देखते ही मुँह फाड़ देते हैं और पैर पकड़ने लगते हैं। यों अँधेरे में तीस-तीस मन का गोला फेंकते हैं।

अथवा

छोटे-से मंच पर बैठी, गंगा की उमड़ती हुई धारा को पन्ना अनमनस्क होकर देखने लगी। उस बात को, जो अतीत में एक बार, हाथ से अनजाने में खिसक जाने वाली वस्तु की तरह गुप्त हो गयी हो, सोचने का कोई कारण नहीं। उससे कुछ बनता-बिगड़ता भी नहीं, परंतु मानव-स्वभाव हिसाब रखने की प्रथानुसार कभी-कभी कह बैठता है, "कि यदि यह बात हो गयी होती तो ?" ठीक उसी तरह पन्ना भी राजा बलवंतसिंह द्वारा बलपूर्वक रानी बनाये जाने के पहले की एक संभावना को सोचने लगी थी।

(ख) नागरिक समाज इसे छोटा काम करने वालों की बड़ी धृष्टता भी कह सकता है, पर मुझे कभी ऐसा नहीं लगता। संभवतः इसका कारण मेरे संस्कार हों। अपनी और अपने पिता की ग्रामीण ननसाल में मुझे बूढ़ी नाइन को बदामो नानी, बूढ़े बरेठा को ननकू दादा कहकर पुकारना पड़ता था। वहाँ कोई छोटा-से-छोटा काम करने वाला भी इतना अभागा नहीं होता कि बड़े काम करने वालों से ऐसे पारिवारिक संबोधन न पा सके। इसी विशेषता के कारण वहाँ नागरिक अर्थ-व्यवसाय को प्रधानता नहीं मिलती।

P.T.O.

अथवा

"धर्म-अधर्म एक दरसाई। राजा करे सो न्याव सदाई।
भीतर स्वाहा बाहर सादे। राज करहिं अगले अरु प्यादे।
अंधाधुंध मच्यौ सब देसा। मानहुँ राजा रहत विदेसा॥
गो द्विज श्रुति आदर नहिं होई। मानहुँ नृपति विधर्मी कोई।
ऊँच-नीच सब एकहिं सारा। मानहुँ ब्रह्म-ज्ञान बिस्तारा।
अंधेर नगरी अनबूझ राजा। टका सेर भाजी टका सेर खाजा॥